CBSE Board

Class 10 / कक्षा : 10

Hindi / हिंदी

Board Question Paper 2014 – Set 2

[Summative Assessment II Course B]

[संकलित परीक्षा - II पाठ्यक्रम ब]

समय: 3 घंटे **पूर्णांक : 90**

निर्देश: (i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं- क, ख, ग और घ ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड क

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि मानवीय गुणों का अधिकाधिक विकास विपरीत परिस्थितियों में ही होता है। जीवन में सर्वत्र इस सत्य के उदाहरण भरे हुए हैं। कष्ट और पीड़ा आंतरिक वृत्तियों के परिशोधन के साथ ही एक ऐसी आंतरिक दृढ़ता को जन्म देते हैं जो मनुष्य को तप्त स्वर्ण की भाँति खरा बनाता है। विपत्तियों के पहाड़ से टकराकर उसका बल बढ़ता है। हृदय में ऐसी अद्भुत वृत्ति का जन्म होता है कि एक बार कष्टों से जूझकर फिर वह उनको खेल समझने लगता है। उसके हृदय में विपत्तियों को ठोकर मारकर अपना मार्ग बना लेने की वीरता उत्पत्र हो जाती है। मन की भाँति ही शरीर की दृढ़ता शारीरिक श्रम के द्वारा आती है। शारीरिक परिश्रम उसके शरीर को बलिष्ठ बनाता है। विपत्तियों में तप कर दृढ़ हुए शरीर की भाँति परिश्रम की अग्नि में तप कर शरीर का लौह इस्पात बन जाता है। जब एक शायर ने कहा कि

'मुश्किलें इतनी पड़ी मुझ पर कि आसाँ हो गईं', तो वह इस सत्य से परिचित था। चारित्रिक दृढ़ता के लिए जो कार्य कष्टों का आधिक्य करता है, शारीरिक दृढ़ता के लिए वही कार्य श्रम करता है। दोनों ही ऐसे हथौड़े हैं जो पीट-पीट कर शरीर और मन में इस्पाती दृढ़ता को जन्म देते हैं।

(i) विपरीत परिस्थितियाँ कारण है :

(क) अनुकूल परिस्थितियों को रोकने की

(ख) समस्या-समाधान की

(ग) सामाजिक चुनौतियाँ स्वीकारने की

(घ) मानवीय गुणों के विकास की

(ii) मनुष्य को सोने जैसा शुध्द बनाने में सहायक है

(क) शरीर की दृढ़ता

(ख) मन की दृढ़ता

(ग) आंतरिक वृत्ति

(घ) विपत्तियों से टकराव

(iii) विपत्तियों के बीच अपना मार्ग बना लेने की क्षमता कब उत्पन्न होती है?

(क) बाधाओं से बचकर

(ख) कष्टों से खेलकर

(ग) कष्टों से जूझकर

(घ) साधन-संपत्र बनकर

(iv) 'लोहा इस्पात बन जाता है' - कथन का आशय है

(क) दुर्बल सबल बन जाता है

(ख) बलहीन बलवान बन जाता है

(ग) सबल अतिसबल बन जाता है

(घ) निर्बल प्रबल बन जाता है

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(क) मन और शरीर

(ख) मानसिक पीड़ा और शारीरिक कष्ट

(ग) मन और शरीर की दृढ़ता

(घ) मानव का विकास

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

नारी केवल कामिनी नहीं, जगद्धात्री भी है, अलंकरण-मात्र ही नहीं, समाज को जीवंत बनाने वाली प्रेरणाशक्ति भी है। आज जनमानस इस दृष्टिकोण से वंचित है। नारी इतनी शक्तिहीन नहीं है। माता बनकर उसकी शक्ति परोक्षरुप में अपने बालकों के चरित्र-निर्माण में कार्य करती है। प्रियारुप में वह समस्त दया, करुणा, ममता और माधुर्य का उपहार देकर पुरुष को उसके कार्यक्षेत्र के लिए नई ऊर्जा प्रदान करती है। विद्या-बुद्धि में गार्गी तथा अपाला बनकर और शौर्य में लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी बनकर उसने अपने तेजस्वी रुप का परिचय समय-समय पर दिया है। स्वदेश में ही नहीं, विदेश में भी ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। जोन ऑफ़ आर्क ने एक साथ आत्मिक बल और शारीरिक बल के

समन्वय से ऐसी ज्योति जलाई जो युगों-युगों तक उनका नाम अमर रखेगी। इतिहास के पन्ने इस बात के साक्षी हैं कि नारी ने केवल चौका-चूल्हा ही नहीं सम्हाला, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर घोड़े की पीठ पर चढ़कर रणक्षेत्र में भी वीरता का परिचय दिया । अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए आततायी को धूल चटा दी।

(i) माता के रुप में नारी का महत्त्वपूर्ण कार्य है

(क) पालन-पोषन करना

(ख) परिवार सम्हालना

(ग) दया-ममता बिखेरना

(घ) चरित्र-निर्माण करना

(ii) नारी किस रुप में पुरुष को नई ऊर्जा प्रदान करती है?

(क) माता के रुप में

(ख) जगद्धात्री के रुप में

(ग) प्रिया के रुप में

(घ) दासी के रुप में

(iii) विद्या-बुद्धि में किन नारियों ने तेजस्वी रुप दिखाया है?

(क) लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी

(ख) सीता और सावित्री

(ग) द्रौपदी और गांधारी

(घ) गार्गी तथा अपाला

(iv) नारियों ने आततायी को धूल क्यों चटाई?

(क) अपनी रक्षा के लिए

(ख) देश की रक्षा के लिए

(ग) मर्यादा की रक्षा के लिए

(घ) पति की रक्षा के लिए

(v) 'परोक्ष' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है

(क) समक्ष

(ख) विपक्ष

(ग) प्रत्यक्ष

(घ) अप्रत्यक्ष

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

पहले से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,

सदा हारती वह मनुष्य के

उद्यम से, श्रमजल से।

ब्रह्मा का अभिलेख -

पढ़ा करते निरुधमी प्राणी

धोते वीर कु-अंक भाल का

बहा भ्रुवों से पानी।

भाग्यवाद आवरण पाप का

और शस्त्र शोषण का,

जिससे रखता दबा एक जन

भाग दूसरे जन का।

पूछो किसी भाग्यवादी से,

यदि विधि-अंक प्रबल है,

पद पर क्यों देती न स्वयं

वसुधा निज रतन उगल है?

(i) मनुष्य को सुख प्राप्त होता है

(क) भाग्य के बल से

(ख) भुजाओं के बल से

(ग) विद्या-बल से

(घ) धन के बल से

(ii) कैसे लोग भाग्यवादी होते है?

(क) कायर

(ख) परिश्रमी

(ग) निरुधमी

(घ) आलसी

(iii) मनुष्य प्रकृति को हरा सकता है

(क) उद्यम और परिश्रम से

(ख) आतंक और भय से

(ग) उग्रता और शोषण से

(घ) भाग्य और पौरुष से

(iv) भाग्यवाद-रुपी हथियार से शोषक

(क) लोगों को भ्रमित करते हैं

(ख) दूसरों का हिस्सा दबाकर रखते हैं

(ग) क्रान्ति नहीं होने देते

(घ) अत्याचार करते है

(v) काव्यांश का मूल संदेश है

(क) भाग्यवादियों को डराना

(ख) उद्यम और परिश्रम का महत्त्व बताना

(ग) वसुधा के रत्नों के बारे में बताना

(घ) वीरों के लक्षण बताना

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

विघ्नों का दल चढ़ आए तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,
क्षुद्र स्वार्थ की ख़ातिर हम तो कभी न गर्हित कर्म करेंगे।
पुण्यभूमि यह भारतमाता, जग की हम तो भीख न लेंगे।
मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे, देती हमको सदा यही है,
कदली, चावल, अन्न विविध औ' क्षीर सुधामय लुटा रही है।
आर्यभूमि उत्कर्षमयी यह, गूँजेगा यह गान हमारा।
कौन करेगा समता इसकी, महिमामय यह देश हमारा।।

(i) लोग निंदित कर्म क्यों करते हैं?

(क) दूसरों को सताने के लिए

(ख) छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए

(ग) दूसरों को पीछे छोड़ने के लिए

(घ) अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए

(ii) काम करते हुए लोग प्राय: डरते हैं

(क) शत्रुओं से

(ख) विघ्न-बाधाओं से

(ग) क्षुद्र स्वार्थों से

(घ) सहायता न मिलने से

(iii) कोई देश हमारे देश से समता नहीं कर सकता क्योंकि हमारा देश

(क) विशाल है

(ख) शक्तिशाली है

(ग) संपन्न है

(घ) महिमावान् है

(iv) 'जग की हम तो भिख न लेंगे' का क्या भाव है?

(क) हम किसी से भीख नहीं माँगेंगे

(ख) हम बेसहारा हैं तो स्वाभिमानी भी हैं

(ग) सहायता के लिए विदेशियों के सामने हाथ नहीं फैलाएँगे

(घ) पराधीन रहकर भी हम स्वावलंबी बनेंगे

(v) कविता में भारत का विशेषण नहीं है

(क) महिमामय

(ख) गर्हित

(ग) उत्कर्षमय

(घ) पुण्यभूमि

खण्ड ख

5. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए :

(i) तुमने एकाएक <u>इतना मधुर</u> गाना क्यों छोड दिया? 1

(ii) गाँव में हर वर्ष <u>पशु-पर्व का आयोजन</u> होता है। 1

(ख) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए : 1

विश्वसंगठन -

(ग) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए : 1

सुंदर हैं जो नयन -

6. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए:

(i) मैदान में हज़ारों आदमियों की <u>भीड़</u> होने लगी। 1

(ii) आंदोलनकारी शहर में प्रदर्शन <u>कर रहे थे</u>। 1

(iii) वे <u>धीरे-धीरे</u> सभास्थल की ओर बढ़ रहे थे। 1

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 1

पुष्पोद्यान

7. (क) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(i) जब क्रांतिकारी ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उसे पकड़ लिया ।

(वाक्य-भेद लिखिए)

(ii) आज झंडा फहराया जाएगा और प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

(iii) जब वे प्रतियोगिता में भाग लेने गए तो बाहर रोक लिए गए।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

(ख) संधि कीजिए : 1

धन + आगम =

8.(क) निम्नलिखित वाक्यों को शुध्द रुप में लिखिए :

(i) हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होनी चाहिए। 1

(ii) केवल यहाँ दो पुस्तकें रखी हैं। 1

(iii) उसने आज घर में क्या करा? 1

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 1

अत्यधिक =

9. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1x4=4

(i) हाथ फैलाना :

(ii) राई का पर्वत करना :

(iii)जाके पैर न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई :

(iv) हाथ कंगन को आरसी क्या? :

खण्ड ग

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3x2=6

(क) जापान में मानसिक रोग के क्या कारण हैं ? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं? 'झेन की देन' पाठ के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

(ख) मुआवज़ा पाने के लिए ख्यूक्रिन ने क्या-क्या कारण दिए ? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए।

(ग) 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के क्रोध का क्या कारण बताया गया है? उसने अपना क्रोध कैसे शांत किया? अपने शब्दों में लिखिए।

11. प्रकृति में आए असंतुलन के कारण और उसके परिणामों की चर्चा, 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के बाधार पर कीजिए । 5

अथवा

वज़ीर अली को एक जाँबाज़ सिपाही क्यों कहा गया है? उसके सैनिक जीवन के क्या लक्ष्य थे? 'कारतूस' पाठ के आधार पर विस्तार से लिखिए।

12. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(i) 'राह कुर्बानियों की न वीरान हो' - का क्या तात्पर्य है?

(क) सैनिक सोच-समझकर आगे बढें

(ख) सैनिक देश के बारे में सोचते रहें

(ग) बलिदानी सैनिकों की परंपरा बनी रहे

(घ) बलिदानी सैनिक आगे बढ़ने की सोच में रहें

(ii) सैनिक किसे सजाने के लिए कहते हैं?

(क) देश की कुर्बानियों को

(ख) जश्न मनाने वालों को

(ग) भारतमाता को

(घ) बलिदानी सैनिकों के जत्थों को

(iii) 'फ़तह का जश्न' से तात्पर्य है

(क) आगे बढ़ने की ख़ुशियाँ

(ख) मृत्यु की ख़ुशी

(ग) जीते जाने की ख़ुशियाँ

(घ) जीत की ख़ुशियाँ

(iv) 'सिर पर कफ़न बाँधने' का किस ओर संकेत है?

(क) सिर बचाने की ओर

(ख) देश पर बलिदान की ओर

(ग) सिर पर मुकुट बाँधने की ओर

(घ) जीवित रहने की ओर

(v) 'काफ़िले' शब्द का अर्थ है

(क) कायरों का गिरोह

(ख) वीरों का समुदाय

(ग) बलिदानियों का झुंड

(घ) यात्रियों का समूह

अथवा

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय ! न जल पाया तुझमें मिल,
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!
जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल !

(i) पतंगे को पश्चात्ताप है कि वह

(क) दिये का प्रकाश न पा सका

(ख) दीपक से एकाकार न हो सका

(ग) दीपक के स्नेह से वंचित रहा

(घ) ज्वाला-कण न बन सका

(ii) स्नेहहीन दीपक किन्हें कहा गया है?

(क) टिमटिमाते तारों का

(ख) चमकते जुगनुओं को

(ग) तेलरहित दीपकों को

(घ) जगमगाते चाँद को

(iii) किस पंक्ति के कथन में विरोध दिखाई पड़ता है?

(क) सारे शीतल कोमल नूतन

(ख) हाय ! न जल पाया तुझमें मिल

(ग) स्नेहहीन नित कितने दीपक

(घ) जलमय सागर का उर जलता

(iv) सागर का हृदय क्यों जलता है?

(क) घिरते बादलों को देखकर

(ख) तारों को चमकता देखकर

(ग) बादलों में बिजली की कौंध देखकर

(घ) विहँसते दीपक को देखकर

(v) पद्यांश में बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

(क) असंख्य तारे छिप जाते हैं

(ख) वह अनंत सीमा वाला है

(ग) गर्जन करता है पर बरसता नहीं

(घ) बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है

13. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते है। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते है। ख़ुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों-जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) व्यवहारवादी लोगों के सजग रहने के क्या-क्या कारण हैं ? 2

(ख) आदर्शवादी लोगों की समाज को क्या-क्या देन है ? 2

(ग) समाज को पतन की ओर ले जाने वाले कौन लोग हैं ? उनका मुख्य उद्देश्य क्या रहता है ? 1

अथवा

उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखो में आँसू आ गए। इस गुनाह को ख़ुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिफ़ॅ रोती रही।

(क) माँ के दुख का क्या कारण था और उसका दुख कैसे बढ़ गया? 2

(ख) माँ के गुनाह और उसके प्रायश्चित पर टिप्पणी कीजिए। 2

(ग) माँ ने खुदा से क्या दुआ माँगी? 1

14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3x3=9

(क) गोपियों द्वारा श्री कृष्ण की बाँसुरी छिपाए जाने में क्या रहस्य है? 'दोहे' कविता के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए।

(ख) 'आत्मत्राण' कविता की पंक्ति 'तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में' का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

(ग) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने दीपक से मोम की तरह घुलने के लिए क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए कि उस घुलने में उसका कौन-सा भाव छिपा है।

(घ) 'मनुष्यता' कविता के आधार पर किन्हीं तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए।

15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6

(क) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर पीटी सर की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

(ख) टोपी ने मुन्नी बाबू के बारे में कौन-सा रहस्य छिपाकर रखा था और क्यों? विस्तार से समझाइए।

(ग) ‘सपनों के-से दिन’पाठ में लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नहीं होता था, क्यों? फिर भी ऐसी कौन-सी बात थी जिस कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? कारण-सहित स्पष्ट कीजिए।

16. आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? 'सपनों के-से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। 4

खण्ड घ

17. विधालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान-प्रदर्शनी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को, इसकी उपयोगिता बताते हुए, प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए। 5

अथवा

जल-बोर्ड द्वारा दूषित जल की आपूर्ति के कारण जन-सामान्य को हो रही कठिनाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अध्यक्ष, जल-बोर्ड को एक पत्र लिखिए।

18. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) <u>संयुक्त परिवार</u>

- संयुक्त परिवार का अर्थ
- संबंधों में पड़ती दरार
- जोड़ने से लाभ

(ख) <u>परोपकार</u>

- आवश्यक
- लाभ
- जीवन में कितना संभव

(ग) <u>जीव-जंतु और मानव</u>

- सहज संबंध
- उपयोगिता
- सुझाव

CBSE Board

Class 10 / कक्षा : 10

Hindi / हिंदी

Board Question Paper 2014 – Set 2

[Summative Assessment II Course B]

[संकलित परीक्षा - II पाठयक्रम ब]

समय: 3 घंटे पूर्णांक : 90

निर्देश: (i) इस प्रश्न-पत्र के चार खण्ड हैं- क, ख, ग और घ ।

(ii) चारों खण्डों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

(iii) यथासंभव प्रत्येक खण्ड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

उत्तरकुंजी

खण्ड क

1. निम्नलिंखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

यह एक सर्वविदित तथ्य है कि मानवीय गुणों का अधिकाधिक विकास विपरीत परिस्थितियों में ही होता है। जीवन में सर्वत्र इस सत्य के उदाहरण भरे हुए हैं। कष्ट और पीड़ा आंतरिक वृत्तियों के परिशोधन के साथ ही एक ऐसी आंतरिक दृढ़ता को जन्म देते हैं जो मनुष्य को तप्त स्वर्ण की भाँति खरा बनाता है। विपत्तियों के पहाड़ से टकराकर उसका बल बढ़ता है। हृदय में ऐसी अद्भुत वृत्ति का जन्म होता है कि एक बार कष्टों से जूझकर फिर वह उनको खेल समझने लगता है। उसके हृदय में विपत्तियों को ठोकर मारकर अपना मार्ग बना लेने की वीरता उत्पत्र हो जाती है। मन की भाँति ही शरीर की दृढ़ता शारीरिक श्रम के द्वारा आती है। शारीरिक परिश्रम उसके शरीर को बलिष्ठ

बनाता है। विपत्तियों में तप कर दृढ़ हुए शरीर की भाँति परिश्रम की अग्नि में तप कर शरीर का लौह इस्पात बन जाता है। जब एक शायर ने कहा कि 'मुश्किलें इतनी पड़ी मुझ पर कि आसाँ हो गईं', तो वह इस सत्य से परिचित था। चारित्रिक दृढ़ता के लिए जो कार्य कष्टों का आधिक्य करता है, शारीरिक दृढ़ता के लिए वही कार्य श्रम करता है। दोनों ही ऐसे हथौड़े हैं जो पीट-पीट कर शरीर और मन में इस्पाती दृढ़ता को जन्म देते हैं।

(i) विपरीत परिस्थितियाँ कारण है :

(क) अनुकूल परिस्थितियों को रोकने की

(ख) समस्या-समाधान की

(ग) सामाजिक चुनौतियाँ स्वीकारने की

(घ) <u>मानवीय गुणों के विकास की</u>

(ii) मनुष्य को सोने जैसा शुध्द बनाने में सहायक है

(क) शरीर की दृढ़ता

(ख) मन की दृढ़ता

(ग) आंतरिक वृत्ति

(घ) <u>विपत्तियों से टकराव</u>

(iii) विपत्तियों के बीच अपना मार्ग बना लेने की क्षमता कब उत्पन्न होती है?

(क) बाधाओं से बचकर

(ख) कष्टों से खेलकर

(ग) <u>कष्टों से जूझकर</u>

(घ) साधन-संपन्न बनकर

(iv) 'लोहा इस्पात बन जाता है' - कथन का आशय है

(क) दुर्बल सबल बन जाता है

(ख) बलहीन बलवान बन जाता है

(ग) <u>सबल अतिसबल बन जाता है</u>

(घ) निर्बल प्रबल बन जाता है

(v) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक हो सकता है

(क) मन और शरीर

(ख) मानसिक पीड़ा और शारीरिक कष्ट

(ग) मन और शरीर की दृढ़ता

(घ) <u>मानव का विकास</u>

2. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

नारी केवल कामिनी नहीं, जगद्धात्री भी है, अलंकरण-मात्र ही नहीं, समाज को जीवंत बनाने वाली प्रेरणाशक्ति भी है। आज जनमानस इस दृष्टिकोण से वंचित है। नारी इतनी शक्तिहीन नहीं है। माता बनकर उसकी शक्ति परोक्षरुप में अपने बालकों के चरित्र-निर्माण में कार्य करती है। प्रियारुप में वह समस्त दया, करुणा, ममता और माधुर्य का उपहार देकर पुरुष को उसके कार्यक्षेत्र के लिए नई ऊर्जा प्रदान करती है। विद्या-बुद्धि में गार्गी तथा अपाला बनकर और शौर्य में लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी बनकर उसने अपने तेजस्वी रुप का परिचय समय-समय पर दिया है। स्वदेश में ही नहीं, विदेश में भी ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं। जोन ऑफ़ आर्क ने एक साथ आत्मिक बल और शारीरिक बल के समन्वय से ऐसी ज्योति जलाई जो युगों-युगों तक उनका नाम अमर रखेगी। इतिहास के पन्ने इस बात के साक्षी हैं कि नारी ने केवल चौका-चूल्हा ही नहीं सम्हाला, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर घोड़े की पीठ पर चढ़कर रणक्षेत्र में भी वीरता का परिचय दिया । अपनी मर्यादा की रक्षा के लिए आततायी को धूल चटा दी।

(i) माता के रुप में नारी का महत्त्वपूर्ण कार्य है

(क) पालन-पोषन करना

(ख) परिवार सम्हालना

(ग) दया-ममता बिखेरना

(घ) <u>चरित्र-निर्माण करना</u>

(ii) नारी किस रुप में पुरुष को नई ऊर्जा प्रदान करती है?

(क) माता के रुप में

(ख) जगद्धात्री के रुप में

(ग) <u>प्रिया के रुप में</u>

(घ) दासी के रुप में

(iii) विद्या-बुद्धि में किन नारियों ने तेजस्वी रुप दिखाया है?

(क) लक्ष्मीबाई एवं चाँदबीबी

(ख) सीता और सावित्री

(ग) द्रौपदी और गांधारी

(घ) <u>गार्गी तथा अपाला</u>

(iv) नारियों ने आततायी को धूल क्यों चटाई?

(क) अपनी रक्षा के लिए

(ख) देश की रक्षा के लिए

(ग) <u>मर्यादा की रक्षा के लिए</u>

(घ) पति की रक्षा के लिए

(v) 'परोक्ष' शब्द का विपरीतार्थक शब्द है

(क) समक्ष

(ख) विपक्ष

(ग) <u>प्रत्यक्ष</u>

(घ) अप्रत्यक्ष

3. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

पहले से कुछ लिखा भाग्य में
मनुज नहीं लाया है,
अपना सुख उसने अपने
भुजबल से ही पाया है।
प्रकृति नहीं डर कर झुकती है
कभी भाग्य के बल से,
सदा हारती वह मनुष्य के
उद्यम से, श्रमजल से।
ब्रह्मा का अभिलेख -
पढ़ा करते निरुधमी प्राणी
धोते वीर कु-अंक भाल का

बहा भ्रुवों से पानी।

भाग्यवाद आवरण पाप का

और शस्त्र शोषण का,

जिससे रखता दबा एक जन

भाग दूसरे जन का।

पूछो किसी भाग्यवादी से,

यदि विधि-अंक प्रबल है,

पद पर क्यों देती न स्वयं

वसुधा निज रतन उगल है?

(i) मनुष्य को सुख प्राप्त होता है

(क) भाग्य के बल से

(ख) <u>भुजाओं के बल से</u>

(ग) विद्या-बल से

(घ) धन के बल से

(ii) कैसे लोग भाग्यवादी होते है?

(क) कायर

(ख) परिश्रमी

(ग) <u>निरुधमी</u>

(घ) आलसी

(iii) मनुष्य प्रकृति को हरा सकता है

(क) <u>उद्यम और परिश्रम से</u>

(ख) आतंक और भय से

(ग) उग्रता और शोषण से

(घ) भाग्य और पौरुष से

(iv) भाग्यवाद-रुपी हथियार से शोषक

(क) लोगों को भ्रमित करते हैं

(ख) <u>दूसरों का हिस्सा दबाकर रखते हैं</u>

(ग) क्रान्ति नहीं होने देते

(घ) अत्याचार करते हैं

(v) काव्यांश का मूल संदेश है

(क) भाग्यवादियों को डराना

(ख) <u>उद्यम और परिश्रम का महत्त्व बताना</u>

(ग) वसुधा के रत्नों के बारे में बताना

(घ) वीरों के लक्षण बताना

4. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

विघ्नों का दल चढ़ आए तो, उन्हें देख भयभीत न होंगे,
अब न रहेंगे दलित दीन हम, कहीं किसी से हीन न होंगे,
क्षुद्र स्वार्थ की ख़ातिर हम तो कभी न गर्हित कर्म करेंगे।
पुण्यभूमि यह भारतमाता, जग की हम तो भीख न लेंगे।
मिसरी-मधु-मेवा-फल सारे, देती हमको सदा यही है,
कदली, चावल, अन्न विविध औ' क्षीर सुधामय लुटा रही है।
आर्यभूमि उत्कर्षमयी यह, गूँजेगा यह गान हमारा।
कौन करेगा समता इसकी, महिमामय यह देश हमारा।।

(i) लोग निंदित कर्म क्यों करते हैं?

(क) दूसरों को सताने के लिए

(ख) <u>छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए</u>

(ग) दूसरों को पीछे छोड़ने के लिए

(घ) अपनी संपत्ति बढ़ाने के लिए

(ii) काम करते हुए लोग प्राय: डरते हैं

(क) शत्रुओं से

(ख) विघ्न-बाधाओं से

(ग) <u>क्षुद्र स्वार्थों से</u>

(घ) सहायता न मिलने से

(iii) कोई देश हमारे देश से समता नहीं कर सकता क्योंकि हमारा देश

(क) विशाल है

(ख) शक्तिशाली है

(ग) संपन्न है

(घ) <u>महिमावान् है</u>

(iv) 'जग की हम तो भिख न लेंगे' का क्या भाव है?

(क) <u>हम किसी से भीख नहीं माँगेंगे</u>

(ख) हम बेसहारा हैं तो स्वाभिमानी भी हैं

(ग) सहायता के लिए विदेशियों के सामने हाथ नहीं फैलाएँगे

(घ) पराधीन रहकर भी हम स्वावलंबी बनेंगे

(v) कविता में भारत का विशेषण नहीं है

(क) महिमामय

(ख) <u>गर्हित</u>

(ग) उत्कर्षमय

(घ) पुण्यभूमि

खण्ड ख

5. (क) निम्नलिखित में रेखांकित पदबंधों के प्रकार लिखिए :

(i) तुमने एकाएक <u>इतना मधुर</u> गाना क्यों छोड दिया? 1

विशेषण पदबंध

(ii) गाँव में हर वर्ष <u>पशु-पर्व का आयोजन</u> होता है। 1

क्रिया पदबंध

(ख) विग्रहपूर्वक समास का नाम लिखिए : 1

विश्वसंगठन - विश्व का संगठन - तत्पुरुष समास

(ग) समस्त पद बनाकर समास का नाम लिखिए : 1

सुंदर हैं जो नयन - सुनयन - कर्मधारय समास

6. (क) निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए:

(i) मैदान में हज़ारों आदमियों की <u>भीड़</u> होने लगी। 1

संज्ञा, समूहवाचक, स्त्रीलिंग, बहुवचन

(ii) आंदोलनकारी शहर में प्रदर्शन <u>कर रहे थे</u>। 1

क्रिया, अकर्मक, पुलिंलग, बहुवचन

(iii) वे <u>धीरे-धीरे</u> सभास्थल की ओर बढ़ रहे थे। 1

रीतिवाचक क्रियाविशेषण, पुल्लिंग, एकवचन

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 1

पुष्पोद्यान - पुष्प + उघान

7. (क) निर्देशानुसार उत्तर दीजिए : 1x3=3

(i) जब क्रांतिकारी ने झंडा गाड़ा तब पुलिस ने उसे पकड़ लिया ।

(वाक्य-भेद लिखिए)

मिश्र वाक्य

(ii) आज झंडा फहराया जाएगा और प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

(मिश्र वाक्य में बदलिए)

आज जब झंडा फहराया जाएगा तब प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी।

(iii) जब वे प्रतियोगिता में भाग लेने गए तो बाहर रोक लिए गए।

(संयुक्त वाक्य में बदलिए)

वे प्रतियोगिता में भाग लेने गए और उन्हें बाहर रोक लिया गया।

(ख) संधि कीजिए : 1

धन + आगम = धनागम

8. (क) निम्नलिखित वाक्यों को शुध्द रुप में लिखिए :

(i) हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होनी चाहिए। 1

हमारा लक्ष्य देश की चहुँमुखी प्रगति होना चाहिए।

(ii) केवल यहाँ दो पुस्तकें रखी हैं। 1

यहाँ केवल दो पुस्तकें रखी हैं।

(iii) उसने आज घर में क्या करा? 1

आज उसने घर में क्या किया ?

(ख) संधि-विच्छेद कीजिए : 1

अत्यधिक = अति + अधिक

9. निम्नलिखित मुहावरों तथा लोकोक्तियों का वाक्यों में प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए : 1x4=4

(i) हाथ फैलाना : किसान बहुत खुद्दार था, उसे किसी के सामने हाथ फैलाना पसंद नहीं था।

(ii) राई का पर्वत करना : किसी भी बात को राई का पर्वत बनाने की रमेश की आदत है।

(iii) जाके पैर न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई : खुद ने कभी मुसीबत का सामना किया हो तो वह दूसरे की तकलीफ समझेगा ना, इसलिए तो कहते है कि 'जाके पैर न फटी बिवाई सो क्या जाने पीर पराई' ।

(iv) हाथ कंगन को आरसी क्या? : जब चोर रंगे हाथ पकड़ा गया तो किससे को कुछ बोलना ही नहीं पड़ा, इसलिए कहते है कि 'हाथ कंगन को आरसी क्या?'

खण्ड ग

10. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3x2=6

(क) जापान में मानसिक रोग के क्या कारण हैं ? आप इन कारणों से कहाँ तक सहमत हैं? 'झेन की देन' पाठ के आधार पर तर्कपूर्ण उत्तर दीजिए।

उत्तर : लेखक के मित्र के अनुसार आजकल जीवन की रफ़्तार बहुत अधिक बढ़ गई है, चलने के स्थान पर दौड़ा जाने लगा है। लोगों के मन में प्रतिस्पर्धा की भावना में भी वृद्धि हुई है। इससे मानसिक तनाव बढ गया है। इसी कारण मानसिक रोगों में भी वृद्धि हो गई है। लेखक के मित्र द्वारा बताए गए कारण सही हैं अत: हम इससे सहमत हैं। इनसे मनुष्य का मानसिक संतुलन बिगडता है।

(ख) मुआवज़ा पाने के लिए ख्यूक्रिन ने क्या-क्या कारण दिए ? 'गिरगिट' पाठ के आधार पर लिखिए।

उत्तर : ख्यूक्रिन ने मुआवज़ा पाने के लिए दलीलें दीं- मैं एक कामकाजी व्यक्ति हूँ। सुनार का काम एक पेचीदा काम है। इस कुत्ते ने मेरी उँगली काट खाई है। मुझे इसी उँगली वालें हाथ से लकडी का जरुरी काम निपटाना था। अब मैं एक हफ्ते तक काम नहीं कर पाऊँगा। मेरा भारी नुकसान होगा। मुझे इस

कुत्ते के मालिक से हरजाना दिलवाया जाए। यह किसी कानून में नहीं लिखा कि आदमखोर जानवर हमें काट खाए और हम उन्हें बर्दाश्त करते रहें।

(ग) 'अब कहाँ दूसरे के दुख से दुखी होने वाले' पाठ में समुद्र के क्रोध का क्या कारण बताया गया है? उसने अपना क्रोध कैसे शांत किया? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : समुद्र के गुस्से का कारण यह था कि उसकी सहनशक्ति को ललकारा गया था। कई सालों से बडे-बडे बिल्डर समुद्र को पीछे धकेलकर उसकी जमीन हथिया रहे थे। इससे समुद्र के लिए अपने पाँव फैलाना तक कठिन हो गया । अत: गुस्से में आकर उसने एक दिन अपनी छाती पर विहार करते हुए तीन जहाजों को बड़ी जोर से अलग - अलग दिशाओं में फेंक दिया जिससे वे औंधे मुँह गिरकर टूट-फूट गए। उनमें सवार यात्री फिर चलने-फिरने योग्य भी नहीं रहे।

11. प्रकृति में आए असंतुलन के कारण और उसके परिणामों की चर्चा, 'अब कहाँ दूसरे के दुख में दुखी होने वाले' पाठ के आधार पर कीजिए । 5

उत्तर : आज मानवजाति ने अपनी बुद्धि से विभिन्न प्रजातियों के बीच बडी-बडी दीवारें खड़ी कर दी है।बढ़ती आबादी ने समंदर तक को नही बख्शा उसे भी पीछे सरकाना शुरु कर दिया, पेड़ों को रास्ते से हटाना शुरु कर दिया, फलस्वरुप बढते प्रदूषण ने पंछियों को उजाडना शुरु कर दिया। बारुदों की विनाश लीलाओं ने वातावरण को सताना शुरु कर दिया। प्रकृति में आए असंतुलन का भयंकर दुष्परिणाम हुआ। अब गरमी में ज्यादा गरमी, बेवक्त की बरसातें, भूकंप, बाढ, तूफान

आने शुरु हो गए। नित्य नए रोग होने लगे। प्रदूषण का खतरा बढ़ता चला जा रहा है।

अथवा

वज़ीर अली को एक जाँबाज़ सिपाही क्यों कहा गया है? उसके सैनिक जीवन के क्या लक्ष्य थे? 'कारतूस' पाठ के आधार पर विस्तार से लिखिए।

उत्तर : वजीर अली एक जाबाँज सिपाही था क्योंकि उसने अवध पर अंग्रेजों की पकड़ को कमजोर कर दिया था। वजीर अली की बहादुरी का सबसे बड़ा प्रमाण उसका कंपनी सरकार की विशाल सेना के साथ टक्कर लेना और कंपनी के वकील का कत्ल करना है।अंग्रेज उसकी तुलना राबिनहुड से करते थे। उसने अपने साहसिक कारनामों से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिए थे।

12. निम्नलिखित काव्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के लिए सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए : 1x5=5

राह कुर्बानियों की न वीरान हो
तुम सजाते ही रहना नए काफ़िले
फ़तह का जश्न इस जश्न के बाद है
ज़िंदगी मौत से मिल रही है गले
बाँध लो अपने सर से कफ़न साथियो
अब तुम्हारे हवाले वतन साथियो।

(i) 'राह कुर्बानियों की न वीरान हो' - का क्या तात्पर्य है?

(क) सैनिक सोच-समझकर आगे बढें

(ख) सैनिक देश के बारे में सोचते रहें

(ग) <u>बलिदानी सैनिकों की परंपरा बनी रहे</u>

(घ) बलिदानी सैनिक आगे बढ़ने की सोच में रहें

(ii) सैनिक किसे सजाने के लिए कहते हैं?

(क) देश की कुर्बानियों को

(ख) जश्न मनाने वालों को

(ग) भारतमाता को

(घ) बलिदानी सैनिकों के जत्थों को

(iii) 'फ़तह का जश्न' से तात्पर्य है

(क) आगे बढ़ने की ख़ुशियाँ

(ख) मृत्यु की ख़ुशी

(ग) जीते जाने की ख़ुशियाँ

(घ) जीत की ख़ुशियाँ

(iv) 'सिर पर कफ़न बाँधने' का किस ओर संकेत है?

(क) सिर बचाने की ओर

(ख) देश पर बलिदान की ओर

(ग) सिर पर मुकुट बाँधने की ओर

(घ) जीवित रहने की ओर

(v) 'काफ़िले' शब्द का अर्थ है

(क) कायरों का गिरोह

(ख) वीरों का समुदाय

(ग) बलिदानियों का झुंड

(घ) यात्रियों का समूह

अथवा

सारे शीतल कोमल नूतन,
माँग रहे तुझसे ज्वाला-कण
विश्व-शलभ सिर धुन कहता मैं
हाय ! न जल पाया तुझमें मिल,
सिहर-सिहर मेरे दीपक जल!
जलते नभ में देख असंख्यक,
स्नेहहीन नित कितने दीपक;
जलमय सागर का उर जलता,
विद्युत ले घिरता है बादल
विहँस-विहँस मेरे दीपक जल !

(i) पतंगे को पश्चात्ताप है कि वह

(क) दिये का प्रकाश न पा सका

(ख) दीपक से एकाकार न हो सका

(ग) दीपक के स्नेह से वंचित रहा

(घ) <u>ज्वाला-कण न बन सका</u>

(ii) स्नेहहीन दीपक किन्हें कहा गया है?

(क) <u>टिमटिमाते तारों का</u>

(ख) चमकते जुगनुओं को

(ग) तेलरहित दीपकों को

(घ) जगमगाते चाँद को

(iii) किस पंक्ति के कथन में विरोध दिखाई पड़ता है?

(क) सारे शीतल कोमल नूतन

(ख) हाय ! न जल पाया तुझमें मिल

(ग) स्नेहहीन नित कितने दीपक

(घ) <u>जलमय सागर का उर जलता</u>

(iv) सागर का हृदय क्यों जलता है?

(क) घिरते बादलों को देखकर

(ख) तारों को चमकता देखकर

(ग) <u>बादलों में बिजली की कौंध देखकर</u>

(घ) विहँसते दीपक को देखकर

(v) पद्यांश में बादलों की क्या विशेषता बताई गई है?

(क) असंख्य तारे छिप जाते हैं

(ख) वह अनंत सीमा वाला है

(ग) गर्जन करता है पर बरसता नहीं

(घ) <u>बिजली का प्रकाश लेकर घिरता है</u>

13. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते है। वे जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते है। ख़ुद ऊपर चढ़ें और अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों-जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है। व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है।

(क) व्यवहारवादी लोगों के सजग रहने के क्या-क्या कारण हैं ? 2

उत्तर : व्यवहारवादी हमेशा सजग रहकर लाभ-हानि को देखकर अन्यों से आगे निकल जाते हैं। वे जीवन में सफल होते हैं।

(ख) आदर्शवादी लोगों की समाज को क्या-क्या देन है ? 2

उत्तर : आदर्शवादी जब खुद सफलता पाते हैं तो अपने साथ दूसरों को भी ऊपर लेकर चलते हैं। शाश्वत मूल्य आदर्शवादी लोगों की देन है।

(ग) समाज को पतन की ओर ले जाने वाले कौन लोग हैं ? उनका मुख्य उद्देश्य क्या रहता है ? 1

उत्तर : व्यवहारवादी लोगों ने तो समाज को गिराया ही है। व्यवहारवादी लोग हमेशा सजग रहते हैं। लाभ-हानि का हिसाब लगाकर ही कदम उठाते हैं। जीवन में सफल होते हैं, अन्यों से आगे भी

जाते हैं पर क्या वे ऊपर चढ़ते हैं। खुद ऊपर चढ़े अपने साथ दूसरों को भी ऊपर ले चलें, यही महत्त्व की बात है। यह काम तो हमेशा आदर्शवादी लोगों ने ही किया है। समाज के पास अगर शाश्वत मूल्यों जैसा कुछ है तो वह आदर्शवादी लोगों का ही दिया हुआ है।

अथवा

उसमें कबूतर के एक जोड़े ने घोंसला बना लिया था। एक बार बिल्ली ने उचककर दो में से एक अंडा तोड़ दिया। मेरी माँ ने देखा तो उसे दुख हुआ। उसने स्टूल पर चढ़कर दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की। लेकिन इस कोशिश में दूसरा अंडा उसी के हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर परेशानी में इधर-उधर फड़फड़ा रहे थे। उनकी आँखों में दुख देखकर मेरी माँ की आँखो में आँसू आ गए। इस गुनाह को ख़ुदा से मुआफ़ कराने के लिए उसने पूरे दिन रोज़ा रखा। दिन-भर कुछ खाया-पिया नहीं। सिर्फ़ रोती रही।

(क) माँ के दुख का क्या कारण था और उसका दुख कैसे बढ़ गया? 2

उत्तर : एक कबूतर के जोड़े ने अपना घोंसला बना लिया था। एक बार एक बिल्ली ने कबूतर के दो अंडों में से एक अंडा फोड दिया। लेखक की माँ ने दूसरे अंडे को बचाने की कोशिश की, परंतु वह उसके हाथों से टूटकर गिर गया।

(ख) माँ के गुनाह और उसके प्रायश्चित पर टिप्पणी कीजिए। 2

उत्तर : कबूतर परेशानी में फडफडाने लगे। उनकी आँखों के दुख को देखकर लेखक की माँ रो पड़ी। उन्होंने पूरे दिन रोजा रखा। उन्होंने रोते-रोतेखुदा से गुनाह माफ करने की प्रार्थना की।

(ग) माँ ने खुदा से क्या दुआ माँगी? 1

उत्तर : लेखक की माँ ने स्टूल पर चढ़कर अंडे को बचाने की कोशिश की, पर इसी कोशिश में वह अंडा हाथ से गिरकर टूट गया। कबूतर फडफडाने लगे। इस दृश्य को देखकर माँ की आँखों में आँसू आ गए। माँ बहुत ही दयालु तथा धर्मभीरु थी। इस पछतावे के कारण उसने दिन-भर का रोजा रखा तथा खुदा से अपना गुनाह माफ करने की दुआ माँगी ।

14. निम्नलिखित में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3x3=9

(क) गोपियों द्वारा श्री कृष्ण की बाँसुरी छिपाए जाने में क्या रहस्य है? 'दोहे' कविता के आधार पर अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : नटखट राधा श्रीकृष्ण का सानिध्य अधिक से अधिक चाहती हैं। गोपियाँ बात करने की लालसा में कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं। वे नटखट कृष्ण से प्रेम -भरी बातें करना चाहती हैं। इस उद्देश्य से वे जानबूझकर कृष्ण की बाँसुरी छिपा लेती हैं, ताकि इसी बहाने वे उनसे बातें करें। वे (श्रीकृष्ण) उनसे अपनी बाँसुरी वापिस पाने के लिए विनती करें तथा अपना बाकी समय उनके साथ बात करते हुए बिताएँ।

(ख) 'आत्मत्राण' कविता की पंक्ति 'तव मुख पहचानूँ छिन-छिन में' का भाव अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : कवि ईश्वर से विनती करता है कि हे करुणामय ईश्वर, मुझे ऐसी बुद्धि दें कि मैं सुख के दिनों में भी आपको न भूलूँ। कवि चाहता है कि जब उसके जीवन में सुख आए तो वह उनमें भी

परमात्मा की कृपा माने। वह पल-पल सिर झुकाकर उसके दर्शन करता रहे।

(ग) 'मधुर-मधुर मेरे दीपक जल' कविता में कवयित्री ने अपने दीपक से मोम की तरह घुलने के लिए क्यों कहा है? स्पष्ट कीजिए कि उस घुलने में उसका कौन-सा भाव छिपा है।

उत्तर : मोमबत्ती के जलने से मोम पिघलता है परन्तु संसार को उजाला मिलता है, उसी प्रकार संसार को सुख देने के लिए दीपक को स्वंय को न्यौछावर करने को कहती है । परमात्मा की प्राप्ति के लिए अपने आपको तिल-तिल कर गलाना होता है। आत्मा परमात्मा का ही एक अंश है। इसके लिए अपने आत्मदीप को जलाना होगा।

(घ) 'मनुष्यता' कविता के आधार पर किन्हीं तीन मानवीय गुणों के बारे में लिखिए।

उत्तर : प्रकृति के अन्य प्राणियों की तुलना में मनुष्य में चेतना शकित की प्रबलता होती है। 'मनुष्यता' कविता के माध्यम से कवि परोपकार, त्याग और दानशीलता से परिपूर्ण जीवन जीने का संदेश देना चाहता है। मनुष्य दूसरों के हित का ख्याल रख सकता है। इस कविता का प्रतिपाद्य यह है कि हमें मृत्यु से नहीं डरना चाहिए और परोपकार के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तप्तर रहना चाहिए । जब हम दूसरों के लिए जीते हैं तभी लोग हमें मरने के बाद भी याद रखते हैं। हमें धन-दौलत का कभी घमंड नहीं करना चाहिए। सभी मनुष्य ईश्वर की संतान है। अत: सभी को एक होकर चलना चाहिए और परस्पर भाईचारे का व्यवहार करना चाहिए।

15. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 3+3=6

(क) 'सपनों के-से दिन' पाठ के आधार पर पीटी सर की किन्हीं तीन चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर : पीटी सर का नाम प्रीतमचंद था। पाठ में वर्णित घटनाओं के आधार पर पीटी सर की चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

(1) व्यकितत्व : उनका शरीर ठिगना तथा दुबला-पतला था परन्तु उनकी आँखें बाज के समान तेज थीं। उनके चेहरे पर चेचक के दाग थे। वे खाकी वर्दी पहने रहते थे, उनके पैरों में चमडे के चौड़े पंजो वाले बूट होते थे। बूटों से ऊँची एडियों के नीचे खुरियाँ लगी रहती थीं और पंजो के नीचे मोटे सिरों वाले कील ठुके रहते थे।

(2) कठोर स्वभाव : मास्टर प्रीतम चंद का स्वभाव बहुत कठोर था। यदि कोई विद्यार्थी अपना सिर भी इधर-उधर हिलाता या पाँव से दूसरी पिंडली खुजलाने लगता तो वे उस पर बाज की तरह झपट पड़ते। पीटी सर विद्यार्थियों को स्काउटिंग का अभ्यास करवाते थे। वे बहुत गंभीर रहते थे। स्कूल में उन्हें कभी हँसते या मुस्कराते नहीं देखा जाता था। वे विद्यार्थियों को कभी-कभी 'मुर्गा' भी बनाते थे। सभी छात्र उनसे भयभीत रहते थे।सभी लडके उस पीटी से बहुत डरते थे क्योंकि उन जितना सख्त अध्यापक न कभी किसी ने देखा, न सुना था।

(3) पक्षी प्रेम : मास्टर प्रीतमचंद को छोटे-छोटे बच्चों के साथ कोई दया या प्रेम नहीं थौ परंतु उन्हे पक्षियों से प्रेम था। उन्हें नौकरी से निकाल जाने की कोई चिंता नहीं थी। वे अपने तोतों को बादाम खिलाते और उनसे मीठी-मीठी बातें करने में अपना दिन व्यतीत करते थे। बच्चों को यह एक चमत्कार लगता था कि जो मास्टर स्कूल के बच्चों को बुरी तरह मारता था, वह अपने तोतों के साथ कैसे मीठी बातें कर लेता था।

(ख) टोपी ने मुन्नी बाबू के बारे में कौन-सा रहस्य छिपाकर रखा था और क्यों? विस्तार से समझाइए।

उत्तर : टोपी जानता था कि मुन्नी बाबू रहीम मियाँ की दुकान पर कबाब खाते थे। घर के लोग यह जानकर मुन्नी बाबू पर नाराज होते अत: टोपी ने मुन्नी बाबू की इस बात को घर वालों से छिपा कर रखा था। मुन्नी बाबू ने उसे कुछ पैसे रिश्वत में भी दिए थे। टोपी वैसे भी किसी की शिकायत करना उचित नहीं समझता था। अत: उसने घर में मुन्नी बाबू की शिकायत नहीं की।

(ग) 'सपनों के-से दिन'पाठ में लेखक को स्कूल जाने का उत्साह नहीं होता था, क्यों? फिर भी ऐसी कौन-सी बात थी जिस कारण उसे स्कूल जाना अच्छा लगने लगा? कारण-सहित स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : लेखक और उसके साथियों में से अधिकतर बच्चों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था। उन दिनों यदि बच्चों को स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था तो माँ-बाप भी उनके साथ जबरदस्ती नहीं करते थे। वे भी बच्चों को अपने साथ काम में लगा लेते थे। थोडा-सा बड़ा होने पर बच्चों को बहीखाते का

हिसाब-किताब सिखा देना आवश्यक समझते थे। बचपन में बच्चों को सब कुछ अच्छा लगता है केवल उन्हें स्कूल जाना अच्छा नहीं लगता था।

नई कक्षा में जाना अच्छा लगता था परंतु साथ में डर भी लगता था कि मास्टर जी से पहले से अधिक मार पड़ेगी ।

लेखक को स्कूल जाना इसलिए अच्छा लगने लगा क्योंकि उसे स्काउटिंग का अभ्यास करवाते समय नीली-पीली झण्डी हाथ में पकडकर वन-टू-थ्री कहना बहुत मनोरंजक लगता था। मास्टर प्रीतमचंद जब उसे शाबाशी देते तो उसका मन खिल उठता था।

16. आज की शिक्षा-व्यवस्था में विद्यार्थियों को अनुशासित बनाए रखने के लिए क्या तरीके निर्धारित हैं? 'सपनों के-से दिन' पाठ में अपनाई गई विधियाँ आज के संदर्भ में कहाँ तक उचित लगती हैं? जीवन-मूल्यों के आलोक में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए। 4

उत्तर : विद्यार्थियों को अनुशासन में रखने के लिए पहले उन्हें सजा के नाम पर कठोर यातनाएँ दी जाती थीं। । स्कूल में विद्यार्थी विशेषकर पीटी मास्टर से बहुत डरते थे। वे उन्हें काफी पीटते एवं डाँटते थे। कक्षा में पढाने वाले अध्यापक भी पाठ याद न करके लाने पर मुर्गा बनाते थे। इससे बच्चों की टाँगों में दर्द एवं जलन होने की शिकायत होने लगती है। सजा का यह ढंग अत्यंत बर्बरतापूर्ण है।

वर्तमान-काल में बच्चों को शारीरिक दंड नहीं दिया जाता। वर्तमान काल में बच्चों को शारीरीक दंड नहीं दिया जा सकता। अध्यापकों को बच्चों के मनोविज्ञान को समझनेका प्रशिक्षण दिया जाता है।मेरे

विचार से शारीरिक दंड पर रोक लगाना एक आवश्यक कदम है। बच्चों को विद्यालय में शारीरिक दंड से नहीं अपितु मानसिक संस्कार द्वारा अनुशासित करना चाहिए। इसके लिए पुरस्कार, प्रशंसा, उत्साहित करना आदि उपाय ठीक रहते हैं।

खण्ड घ

17. विद्यालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान-प्रदर्शनी का विवरण देते हुए किसी प्रतिष्ठित दैनिक समाचार-पत्र के संपादक को, इसकी उपयोगिता बताते हुए, प्रकाशनार्थ पत्र लिखिए। 5

प्रति,

संपादक महोदय,

दैनिक भास्कर,

नई दिल्ली।

विषय : विद्यालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान-प्रदर्शनी की उपयोगिता।

महोदय,

मैं आपके पत्र दैनिक भास्कर का नियमित पाठक हूँ। मैं इसके माध्यम से विद्यालय में आयोजित सामाजिक विज्ञान-प्रदर्शनी की उपयोगिता दर्शाना चाहता हूँ ।

कुछ दिन पूर्व हमारे विद्यालय में सामाजिक विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था । इस प्रदर्शनी में विद्यार्थियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया था । यह प्रदर्शनी हमारे विद्यालय के मैदान में आयोजित की गई थी। मैदान को बहुत ही सुन्दर ढंग से सजाया गया और विज्ञान से संबंधित सभी वस्तुओं को उस प्रदर्शनी में शामिल किया गया था । विद्यालय के मेधावी विद्यार्थियों ने सामाजिक विज्ञान से सम्बधित विषयों पर प्रोजेक्ट बनाए थे। प्रदर्शनी में

विभिन्न प्रकार के विज्ञान संबंधित संयंत्र, सुंदर-सुंदर मॉडल, विज्ञान द्वारा की गई उनत्ति को देखकर मन अत्यंत प्रसन्न हो उठा।

यह प्रदर्शनी बहुत ही ज्ञानवर्धक थी। हमारे विद्यालय के प्रधानाचार्य और अध्यापकगणों ने विद्यार्थियों के कार्यों को सहारा और उनको आगे बढ़नेमें सहयोग दिया।

धन्यवाद,

भवदीय,

क.ख.ग.

दिनांक : 05.04.2014

अथवा

जल-बोर्ड द्वारा दूषित जल की आपूर्ति के कारण जन-सामान्य को हो रही कठिनाइयों की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए अध्यक्ष, जल-बोर्ड को एक पत्र लिखिए।

सेवा में,

जल-बोर्ड अधिकारी,

दिल्ली नगर निगम कार्यालय,

सिविल लाइन्स, दिल्ली।

विषय - दूषित जल की आपूर्ति के संदर्भ में।

महोदय,

हमारे क्षेत्र की जल-व्यवस्था अत्यंत शोचनीय है। पिछले कुछ दिनों से हमारे क्षेत्र में अशुद्ध जल की आपूर्ति हो रही है। इससे कई लोग बीमार हो रहे हैं । एक विशेष प्रकार के डायरिया के फैलने के भी समाचार मिले हैं।

अत: आपसे निवेदन करना चाहता हूँ कि आप हमारे क्षेत्र की जल-व्यवस्था में शीघ्र सुधार करें। साथ ही जल आपूर्ति के समय में वृद्धि करें।

भवदीय,

क.ख.ग.

दिनांक : 05.04.2014

18. दिए गए संकेत-बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 80-100 शब्दों में एक अनुच्छेद लिखिए : 5

(क) <u>संयुक्त परिवार</u>

- संयुक्त परिवार का अर्थ
- संबंधों में पड़ती दरार
- जोड़ने से लाभ

संयुक्त परिवार से संयुक्त उर्जा का जन्म होता है। संयुक्त उर्जा दुखों को खत्म करती है । बच्चे संयुक्त परिवार में दादा-दादी, काका-काकी, बुआ आदि के प्यार की छांव में खेलते-कूदते और संस्कारों को सीखते हुए बड़े होते हैं । संयुक्त परिवार हमारी सामाजिक व्यवस्था का मूल आधार है लेकिन आज के प्रतिस्पर्धा भरे युग में जहॉ हर व्यक्ति अपने को दूसरे से बेहतर साबित करने के होड़ में जुटा है, कम उम्र एवं कम समय मे ज्यादा कामयाबी, ऊँचा पद तथा आमदनी हासिल करने के जूनून में व्यक्ति परिवार से दूर होते जा रहा है। बदलती जीवनशैली और प्रतिस्पर्धा के दौर में तनाव तथा अन्य मानसिक समस्याओं से निपटने में अपनों का साथ अहम भूमिका निभा सकता है। संयुक्त परिवार में सभी सदस्य एक दूसरे के आचार व्यव्हार पर निरंतर निगरानी बनाय रखते हैं ,किसी की अवांछनीय गतिविधि पर अंकुश लगा रहता है, अर्थात प्रत्येक सदस्य चरित्रवान बना रहता है । किसी समस्या के समय सभी परिजन उसका साथ देते हैं।

(ख) <u>परोपकार</u>

- आवश्यक
- लाभ
- जीवन में कितना संभव

परोपकार दो शब्दों के मेल से बना है, पर (दूसरों) + उपकार, दूसरों पर उपकार अर्थात् भलाई। परोपकार का अर्थ है दूसरों की भलाई करना। सच्चा परोपकारी वही व्यक्ति है जो प्रतिफल की भावना न रखते हुए परोपकार करता है। बिना दूसरों की सहायता व सहयोग के कोई व्यक्ति अपने को औसत स्तर से ऊपर नहीं उठा सकता। यदि हम अकेले ही सब कर पाते तो आज कोई भी मनुष्य इस संसार में दुःखी नहीं रहता। हम प्रकृति के कण-कण में देख सकते हैं, सूर्य, चन्द्र, वायु, पेड़-पौधे, नदी, बादल और हवा बिना स्वार्थ के संसार की सेवा में लगे हुए हैं। इसके बदले ये हमसें कुछ अपेक्षा नहीं करते, ये बस परोपकार करते हैं। गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते है कि शुभ कर्म करने वालों का न यहां, न परलोक में विनाश होता है। शुभ कर्म करने वाला दुर्गति को प्राप्त नहीं होता है। महात्मा गाँधी, मदर टेरेसा, जैसी हस्तियाँ के उदाहरण आज समाज में कम ही देखने को मिलते हैं पर फिर भी इनसे ही समाज में आज परोपकार की भावना जीवंत है।

(ग) <u>जीव-जंतु और मानव</u>

- सहज संबंध
- उपयोगिता
- सुझाव

जीव जंतु मानव कि ज़िन्दगी का एक अविभाज्य अंग हैं, बहुत से लोग अक्सर जीव जंतुओं से डरते हैं, और उन्हें नुकसान भी पहुँचाते है। ये इसलिए होता है क्योंकि जीव जंतुओं के बारे में लोगों को कम जानकारी होती है। असल में वो मानव के लिए काफी उपयुक्त होते हैं, मानव के मित्र होते हैं । इस बात का उत्तम उदहारण है केंचुए, ये ज़मीन के नीचे रहते हैं और मानव को बिना कोई हानि पहुचाये अपना जीवन व्यतीत करते हैं, इनकी उपयोगिता के बारे में शहरी लोगों से ज्यादा किसानों को जानकारी होती है,केंचुए ज़मीन के नीचे रेहकर उसे भुरभुरा करते हैं, इससे ज़मीन कि उपज बढ़ती है और किसानों को आर्थिक फायदा होता है, ये होते हुए भी कई बार लोग केंचुए को नुकसान पहुँचाते है, कभी डर कि वजह से तो कभी मज़े के लिए, मानवों को ये समझने कि ज़रूरत है कि ऐसा करना गलत है और उसे टालने के लिए जीव जंतुओं के बारे में बचपन से जानकारी दी जाना ज़रूरी है । जीव-जंतु का विनाश करने से प्रकृति का भी संतुलन बिगड़ता है। पशु-पक्षी आदि, प्राकृतिक सन्तुलन के अभिन्न अंग होते है। प्रकृति की एक समग्र जैव व्यवस्था होती है। उसमें मानव का स्वार्थपूर्ण दखल पूरी व्यवस्था को विचलित कर देता है । जीव-जन्तु हमारी ही भांति इस प्रकृति के आयोजन-नियोजन का अटूट हिस्सा होते है। वे पूरे सिस्टम को आधार प्रदान करते है। इसीलिए विश्व के सभी धर्मों के प्रणेता व महापुरूष, हिंसा, क्रूरता, जीवों को अकारण कष्ट व पीड़ा देने को गुनाह कहते है। वे प्रकृति के संसाधनों के मर्यादित उपभोग की सलाह देते है।